National Research Journal of Social Sciences
Volume-11, Issue-1, January-June 2026
PP: 540-544

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

शिक्षा में अभिभावकों की भूमिका पर गिजूभाई बधेका के शैक्षिक विचार

नीता सिंह

शोध छात्रा
संदीपनी एकेडमी, पेंड्री, मस्तुरी, बिलासपुर

रीता सिंह

प्राचार्य
संदीपनी एकेडमी, पेंड्री, मस्तुरी, बिलासपुर

सारांश

गिजूभाई बधेका भारत के अग्रणी शिक्षा सुधारकों में से एक थे, जिन्होंने बाल-केंद्रित शिक्षा और शिक्षा में माता-पिता की सक्रिय भागीदारी पर बल दिया। यह शोधपत्र अधिगम प्रक्रिया में माता-पिता की भूमिका के संबंध में उनके शैक्षिक विचारों का विश्लेषण करता है। गिजूभाई का मानना था कि माता-पिता ही प्रथम शिक्षक होते हैं और घर ही बच्चे का प्रारंभिक अधिगम वातावरण होता है। उन्होंने स्नेह, भावनात्मक सुरक्षा, स्वतंत्रता, रचनात्मकता और नैतिक मार्गदर्शन को पालन-पोषण के आवश्यक तत्व बताया। यह अध्ययन भय-आधारित अनुशासन और रटने की पद्धति के प्रति उनके विरोध को उजागर करता है, जिसके परिणामस्वरूप उन्होंने आनंदमय और अनुभवात्मक शिक्षा का समर्थन किया। यह बच्चों के सर्वांगीण विकास के लिए माता-पिता और शिक्षकों के बीच सहयोग पर उनके विचारों पर भी चर्चा करता है। यह शोधपत्र शैक्षणिक दबाव, भावनात्मक तनाव और माता-पिता की घटती भागीदारी जैसी आधुनिक शैक्षिक चुनौतियों के समाधान में उनके विचारों की समकालीन प्रासंगिकता का भी पता लगाता है। उनका दर्शन पोषणकारी और बाल-हितैषी शैक्षिक वातावरण बनाने के लिए मूल्यवान मार्गदर्शन प्रदान करता है।

1 प्रस्तावना

गिजूभाई बधेका भारत के महानतम शिक्षा सुधारकों में से एक थे और उन्हें अक्सर "भारत का मोंटेसरी" कहा जाता है। उनके शैक्षिक दर्शन ने स्वतंत्रता, रचनात्मकता, भावनात्मक सुरक्षा और बाल-केंद्रित शिक्षा पर जोर देकर बचपन की शिक्षा की पारंपरिक समझ को बदल दिया। उन्होंने भय आधारित शिक्षा का पुरजोर विरोध किया और उनका मानना था कि सीखना बच्चों की रुचियों और अनुभवों से स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होना चाहिए। गुजरात के दक्षिणामूर्ति बालमंदिर में उनके शैक्षिक प्रयोगों ने दिखाया कि कैसे आनंदमय शिक्षण वातावरण बच्चों के सर्वांगीण विकास को आकार दे सकता है।

गिजूभाई बधेका के शैक्षिक दर्शन का एक महत्वपूर्ण पहलू सीखने की प्रक्रिया में माता-पिता की सक्रिय भूमिका थी। उनका मानना था कि शिक्षा केवल स्कूलों या शिक्षकों तक ही सीमित नहीं है। उनके अनुसार, माता-पिता बच्चों के पहले शिक्षक हैं और घर पहला स्कूल है। माता-पिता द्वारा निर्मित भावनात्मक वातावरण बच्चे के बौद्धिक, नैतिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास को गहराई से प्रभावित करता है। उन्होंने एक पोषणकारी शैक्षिक वातावरण बनाने के लिए शिक्षकों, माता-पिता और समाज के बीच सहयोग की वकालत की।

निम्नलिखित चर्चा में पांच प्रमुख खंडों के माध्यम से अधिगम में माता-पिता की भूमिका पर गिजूभाई बधेका के शैक्षिक विचारों का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है।

2 माता-पिता बच्चे के पहले शिक्षक

गिजूभाई बधेका - मानते थे कि शिक्षा की शुरुआत बहुत पहले होती है। उनके अनुसार, पारिवारिक वातावरण बच्चे के व्यक्तित्व, आदतों, भाषा और भावनात्मक सुरक्षा की नींव रखता है। माता-पिता, विशेषकर बचपन के शुरुआती वर्षों में, बच्चे की दुनिया को देखने की समझ को आकार देते हैं। इसलिए, उन्होंने माता-पिता को बच्चे के जीवन में पहले और सबसे प्रभावशाली शिक्षक माना।

उन्होंने तर्क दिया कि बच्चे अवलोकन और अनुकरण के माध्यम से स्वाभाविक रूप से सीखते हैं। माता-पिता जो भी मूल्य, दृष्टिकोण और व्यवहार प्रदर्शित करते हैं, बच्चे उन्हें अनजाने में आत्मसात कर लेते हैं। यदि माता-पिता दया, धैर्य, अनुशासन, ईमानदारी और करुणा का प्रदर्शन करते हैं, तो बच्चे धीरे-धीरे इन गुणों को विकसित करते हैं। दूसरी ओर, भय, दंड या उपेक्षा से भरे वातावरण बच्चों के भावनात्मक विकास को नकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

गिजूभाई ने अधिकार और भय पर अत्यधिक निर्भर पारंपरिक पालन-पोषण प्रथाओं की कड़ी आलोचना की। उनके समय में, कई बच्चों को घर और स्कूल दोनों जगह कठोर अनुशासन का सामना करना पड़ता था। उनका मानना था कि ऐसी प्रथाएं बच्चों में जिज्ञासा और आत्मविश्वास को नष्ट कर देती हैं। इसके बजाय, उन्होंने स्नेहपूर्ण पालन-पोषण की वकालत की, जिसमें बच्चों के साथ गरिमा और सम्मान के साथ व्यवहार किया जाता है।

अपने बेटे के जन्म के बाद ही उन्हें कठोर शैक्षिक वातावरण के बारे में चिंता होने लगी। उन्हें डर था कि दंडात्मक पारंपरिक विद्यालय बच्चों के भावनात्मक स्वास्थ्य को नुकसान पहुंचाएंगे। इस व्यक्तिगत अनुभव ने उन्हें बाल मनोविज्ञान और मोंटेसरी सिद्धांतों से प्रेरित बेहतर शैक्षिक पद्धतियों की खोज करने के लिए प्रेरित किया।

गिजूभाई के अनुसार, माता-पिता को केवल बच्चों को निर्देश नहीं देना चाहिए, बल्कि उनकी भावनात्मक और विकासात्मक आवश्यकताओं को समझना चाहिए। प्रत्येक बच्चे में स्वाभाविक क्षमताएं और रचनात्मकता होती है। माता-पिता का दायित्व है कि वे ऐसे वातावरण का निर्माण करें जिसमें ये क्षमताएं स्वाभाविक रूप से विकसित हो सकें। उनका मानना था कि अत्यधिक नियंत्रण व्यक्तिवाद को दबाता है, जबकि प्रेम और स्वतंत्रता स्वतंत्र चिंतन को प्रोत्साहित करते हैं।

उनके दर्शन का एक और महत्वपूर्ण पहलू यह था कि नैतिक मूल्यों का विकास औपचारिक उपदेशों के बजाय दैनिक जीवन के अनुभवों के माध्यम से होना चाहिए। उनका तर्क था कि बच्चों को केवल व्याख्यानों से ही नैतिकता नहीं सीखनी चाहिए। इसके बजाय, उन्हें घर में माता-पिता के आचरण को देखकर नैतिक व्यवहार का विकास करना चाहिए। इसलिए, माता-पिता को सत्यनिष्ठा, सहयोग, सहानुभूति और सादगी के आदर्श बनना चाहिए।

गिजूभाई का यह भी मानना था कि माता-पिता को बच्चों को अपूर्ण वयस्क मानने के बजाय बचपन को जीवन की एक अनूठी अवस्था के रूप में पहचानना चाहिए। बच्चों में अपनी भावनाएँ, कल्पना और जिज्ञासा होती है। इन विशेषताओं का सम्मान स्वस्थ शिक्षा के लिए आवश्यक है। इसलिए, उन्होंने माता-पिता और बच्चों के बीच धैर्यपूर्वक सुनने, भावनात्मक समर्थन और समझ पर जोर दिया।

उनके शैक्षिक विचारों में, घर का वातावरण प्रश्न पूछने, प्रयोग करने और रचनात्मक अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता प्रदान करना चाहिए। बच्चों को परिवार के भीतर मनोवैज्ञानिक रूप से सुरक्षित महसूस करना चाहिए। ऐसी भावनात्मक सुरक्षा आत्मविश्वास, जिज्ञासा और सीखने के प्रति प्रेम विकसित करती है।

इस प्रकार, गिजूभाई बधेका ने माता-पिता को बच्चे की प्रारंभिक शिक्षा और व्यक्तित्व निर्माण का प्राथमिक निर्माता माना।

3 अधिगम में भावनात्मक सुरक्षा और स्नेह

गिजूभाई बधेका के दर्शन की सबसे उल्लेखनीय विशेषताओं में से एक भावनात्मक विकास पर उनका ज़ोर था। उनका मानना था कि भय और चिंता के वातावरण में सार्थक अधिगम असंभव है। उनके अनुसार, बच्चे तब सबसे अच्छा सीखते हैं जब वे भावनात्मक रूप से सुरक्षित, प्रेममय और सम्मानित महसूस करते हैं।

इस संदर्भ में, माता-पिता की भूमिका महत्वपूर्ण होती है क्योंकि घर का भावनात्मक वातावरण बच्चे के अधिगम के प्रति दृष्टिकोण को सीधे प्रभावित करता है। गिजूभाई ने देखा कि सहायक परिवारों में पले-बढ़े बच्चे सत्तावादी वातावरण में पले-बढ़े बच्चों की तुलना में अधिक प्रभावी ढंग से आत्मविश्वास, जिज्ञासा और सामाजिक समायोजन विकसित करते हैं।

उन्होंने घर और स्कूलों दोनों में शारीरिक दंड और अपमान का विरोध किया। उनका मानना था कि भय सीखने की स्वाभाविक इच्छा को कमजोर करता है। बच्चों को प्रेरित करने के बजाय, दंड असुरक्षा और असंतोष पैदा करता है। इसलिए, उन्होंने माता-पिता को धैर्य और स्नेह के साथ बच्चों का मार्गदर्शन करने के लिए प्रोत्साहित किया।

गिजूभाई के अनुसार, स्नेह पालन-पोषण में कमजोरी का संकेत नहीं है। बल्कि, यह स्वस्थ अनुशासन की नींव है। उनका मानना था कि जब बच्चे माता-पिता के साथ प्रेम और भावनात्मक जुड़ाव का अनुभव करते हैं तो वे स्वेच्छा से सहयोग करते हैं। माता-पिता और बच्चों के बीच आपसी विश्वास ईमानदारी और खुलेपन को बढ़ावा देता है।

उन्होंने बच्चों की मनोवैज्ञानिक ज़रूरतों को समझने के महत्व पर भी बल दिया। हर बच्चा खुशी, डर, गुस्सा, जिज्ञासा और निराशा जैसी भावनाओं का अनुभव करता है। माता-पिता को इन भावनाओं को स्वीकार करना चाहिए और उन्हें दबाने के बजाय संवेदनशीलता से प्रतिक्रिया देनी चाहिए। भावनात्मक उपेक्षा आत्मसम्मान को ठेस पहुंचा सकती है और सीखने में बाधा डाल सकती है।

गिजूभाई के शिक्षा दर्शन में कहानी सुनाना एक महत्वपूर्ण स्थान रखता था। उनका मानना था कि कहानियाँ बच्चों को नैतिक मूल्यों और सामाजिक अनुभवों से भावनात्मक रूप से जुड़ने में मदद करती हैं। माता-पिता को नियमित रूप से बच्चों को कहानियाँ, गीत और सांस्कृतिक कथाएँ सुनानी चाहिए क्योंकि ऐसी गतिविधियाँ कल्पनाशीलता, भाषा विकास और भावनात्मक जुड़ाव को मजबूत करती हैं।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

उन्होंने बचपन की शिक्षा में खेल को भी एक आवश्यक अंग बताया। उनके अनुसार, बच्चे खेल गतिविधियों के माध्यम से भावनाओं को व्यक्त करते हैं और सामाजिक संबंधों को समझते हैं। माता-पिता को प्रारंभिक बचपन में अत्यधिक शैक्षणिक दबाव डालने के बजाय मुक्त खेल को प्रोत्साहित करना चाहिए।

गिजूभाई के दर्शन में यह मान्यता थी कि भावनात्मक कल्याण बौद्धिक विकास से सीधे जुड़ा हुआ है। एक सुरक्षित महसूस करने वाला बच्चा एकाग्रता, रचनात्मकता और सामाजिक आत्मविश्वास को अधिक स्वाभाविक रूप से विकसित करता है। इस प्रकार, माता-पिता की भूमिका शारीरिक देखभाल से परे भावनात्मक पोषण तक फैली हुई है।

उनका यह भी मानना था कि माता-पिता का स्नेह सीखने के लिए आंतरिक प्रेरणा विकसित करता है। बच्चों को जिज्ञासा और आनंद के कारण सीखना चाहिए, न कि दंड के भय या पुरस्कार की लालसा के कारण। इसलिए, माता-पिता को केवल शैक्षणिक उपलब्धि पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय अन्वेषण को प्रोत्साहित करना चाहिए और बच्चों के प्रयासों की सराहना करनी चाहिए।

संक्षेप में, गिजूभाई भावनात्मक सुरक्षा को शिक्षा का केंद्र मानते थे, और माता-पिता को इस भावनात्मक आधार के प्राथमिक प्रदाता के रूप में देखते थे।

4 घर पर स्वतंत्रता, रचनात्मकता और स्व-निर्देशित अधिगम

गिजूभाई बधेका शिक्षा के मूलभूत सिद्धांत के रूप में स्वतंत्रता में दृढ़ विश्वास रखते थे। उनके अनुसार, बच्चों में स्वाभाविक जिज्ञासा और रचनात्मकता होती है जिसे स्वतंत्र रूप से विकसित होने देना चाहिए। माता-पिता को अत्यधिक प्रतिबंधों से बचना चाहिए और इसके बजाय स्व-निर्देशित अधिगम के अवसर प्रदान करने चाहिए। उन्होंने उन कठोर शैक्षिक पद्धतियों की आलोचना की जिनमें बच्चों से बिना समझे जानकारी को रटने की अपेक्षा की जाती थी। ऐसी प्रणालियाँ रचनात्मकता और व्यक्तित्व का दमन करती थीं। गिजूभाई का मानना था कि सच्ची शिक्षा स्वतंत्र सोच और आत्मविश्वास विकसित करती है।

पारिवारिक वातावरण में, माता-पिता को बच्चों को प्रश्न पूछने, परिवेश का अन्वेषण करने और अपने विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता देनी चाहिए। उनका मानना था कि जिज्ञासा अधिगम की प्रेरक शक्ति है। जब माता-पिता प्रश्न पूछने को हतोत्साहित करते हैं या अंधाधुंध आज्ञापालन थोपते हैं, तो बच्चे धीरे-धीरे खोज और नवाचार में रुचि खो देते हैं।

गिजूभाई का दर्शन मोंटेसरी शिक्षा से बहुत प्रभावित था, जो स्व-गतिविधि और अनुभवात्मक अधिगम पर जोर देती है। उन्होंने इन विचारों को भारतीय सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुकूल ढाला और माता-पिता को ऐसे प्रेरक घरेलू वातावरण बनाने के लिए प्रोत्साहित किया जहाँ बच्चे व्यावहारिक अनुभवों के माध्यम से सीख सकें।

उनके अनुसार, अधिगम सामग्री सरल, स्वाभाविक और रोजमर्रा की जिंदगी से जुड़ी होनी चाहिए। घरेलू गतिविधियाँ भी शैक्षिक अनुभव बन सकती हैं। माता-पिता बच्चों को बागवानी, खाना पकाने, कहानी सुनाने, सफाई करने, प्रकृति का अवलोकन करने और रचनात्मक कलाओं में शामिल कर सकते हैं। इस तरह की भागीदारी से बच्चों में व्यावहारिक ज्ञान और जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है।

उन्होंने संगीत, चित्रकला, नाटक और कहानी सुनाने के माध्यम से रचनात्मक अभिव्यक्ति के महत्व पर भी बल दिया। माता-पिता को बच्चों की कल्पनाशीलता की सराहना करनी चाहिए, न कि उनका कठोर मूल्यांकन करना चाहिए। रचनात्मक स्वतंत्रता बच्चों को मौलिकता और भावनात्मक संतुलन विकसित करने में सहायक होती है।

गिजूभाई का एक और प्रमुख विचार खेल के माध्यम से सीखना था। उनका मानना था कि खेल से समस्या सुलझाने की क्षमता, सहयोग, भाषा कौशल और कल्पनाशीलता का विकास होता है। इसलिए माता-पिता को प्रारंभिक बचपन में बच्चों पर कठोर शैक्षणिक कार्यक्रम का बोझ नहीं डालना चाहिए।

गिजूभाई का यह भी मानना था कि आत्म-अनुशासन थोपे गए अनुशासन से कहीं अधिक मूल्यवान है। जब बच्चों को जिम्मेदारी और स्वतंत्रता दी जाती है, तो वे धीरे-धीरे अपने व्यवहार को नियंत्रित करना सीखते हैं। इसलिए माता-पिता को मार्गदर्शन करना चाहिए, न कि उन पर हावी होना चाहिए।

उन्होंने माता-पिता को बच्चों में मौजूद व्यक्तिगत भिन्नताओं को पहचानने के लिए प्रोत्साहित किया। प्रत्येक बच्चा अलग-अलग गति से सीखता है और उसमें अद्वितीय प्रतिभाएं होती हैं। बच्चों की दूसरों से तुलना करने से हीनता और चिंता उत्पन्न होती है। इसके बजाय, माता-पिता को व्यक्तिगत प्रगति की सराहना करनी चाहिए और व्यक्तिगत विकास को प्रोत्साहित करना चाहिए।

उनके शैक्षिक दर्शन ने परिवार के भीतर लोकतांत्रिक संबंधों को बढ़ावा दिया। बच्चों को एक व्यक्ति के रूप में सम्मानित और मूल्यवान महसूस करना चाहिए। माता-पिता को उनके विचारों को सुनना चाहिए और उन्हें उनकी उम्र के अनुरूप सरल निर्णय लेने की प्रक्रियाओं में शामिल करना चाहिए।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

इस प्रकार, गिजूभाई घर को एक रचनात्मक शिक्षण वातावरण के रूप में देखते थे जहाँ स्वतंत्रता, अन्वेषण और स्व-गतिविधि बच्चे के संपूर्ण विकास को पोषित कर सकती थी।

5 माता-पिता और शिक्षकों के बीच सहयोग

गिजूभाई बधेका का मानना था कि शिक्षा एक सामूहिक सामाजिक जिम्मेदारी है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि केवल शिक्षक ही बच्चों के उचित विकास को सुनिश्चित नहीं कर सकते। प्रभावी शिक्षा के लिए माता-पिता, शिक्षक, अभिभावक और समाज को सद्भावपूर्वक मिलकर काम करना चाहिए। उन्होंने देखा कि कई शैक्षिक समस्याएं इसलिए उत्पन्न होती हैं क्योंकि स्कूल और परिवार सार्थक संवाद के बिना अलग-अलग कार्य करते हैं। इसलिए, उन्होंने माता-पिता और शिक्षकों के बीच घनिष्ठ सहयोग की वकालत की। गिजूभाई के अनुसार, माता-पिता और शिक्षकों दोनों को बच्चों के मनोवैज्ञानिक स्वभाव को समझना चाहिए। उन्हें विरोधाभासी अपेक्षाओं से बचना चाहिए और मूल्यों और अनुशासन में निरंतरता बनाए रखनी चाहिए। यदि बच्चे घर में भय और स्कूल में स्वतंत्रता का अनुभव करते हैं, या इसके विपरीत, तो भ्रम और भावनात्मक संघर्ष उत्पन्न हो सकता है। उनका मानना था कि माता-पिता को शिक्षा को केवल स्कूलों की जिम्मेदारी मानने के बजाय शैक्षिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेना चाहिए। माता-पिता को शिक्षकों के साथ नियमित रूप से संवाद करना चाहिए, बच्चे की प्रगति को समझना चाहिए और घर पर शैक्षिक उद्देश्यों का समर्थन करना चाहिए। दक्षिणामूर्ति बालमंदिर में, गिजूभाई ने ऐसी शैक्षिक विधियों का प्रयोग किया जो माता-पिता की भागीदारी को प्रोत्साहित करती थीं। उन्होंने एक ऐसा वातावरण बनाने का प्रयास किया जहाँ स्कूल कठोर संस्थानों के बजाय पोषण देने वाले घरों के समान हों। इसका उद्देश्य बच्चों को भावनात्मक रूप से सहज और सामाजिक रूप से जुड़ा हुआ महसूस कराना था।

गिजूभाई ने शिक्षक प्रशिक्षण पर विशेष बल दिया क्योंकि शिक्षकों को बाल मनोविज्ञान और प्रगतिशील शिक्षा पद्धतियों को समझना आवश्यक था। उन्होंने बाल-केंद्रित शिक्षा में शिक्षकों को प्रशिक्षित करने के लिए अध्यापन मंदिर की स्थापना की।

उनका मानना था कि माता-पिता को भी बाल विकास के बारे में स्वयं को शिक्षित करना चाहिए। कई पारंपरिक पालन-पोषण पद्धतियाँ अज्ञानता, भय और सामाजिक दबाव पर आधारित थीं। इसलिए, माता-पिता को स्वस्थ शैक्षिक दृष्टिकोणों के बारे में जागरूक होना आवश्यक था।

उनके दर्शन का एक अन्य महत्वपूर्ण पहलू शिक्षकों और माता-पिता के बीच पारस्परिक सम्मान था। शिक्षकों को शैक्षिक कठिनाइयों के लिए माता-पिता को दोष नहीं देना चाहिए, और माता-पिता को शिक्षकों को केवल सेवा प्रदाता के रूप में नहीं देखना चाहिए। दोनों को सर्वांगीण बाल विकास के साझा उद्देश्य के लिए सहयोग करना चाहिए।

गिजूभाई ने शैक्षिक चर्चाओं और सामुदायिक भागीदारी को भी प्रोत्साहित किया। उनका मानना था कि समाज को बचपन को एक अनमोल अवस्था के रूप में पहचानना चाहिए जिसे संरक्षण, समझ और उचित मार्गदर्शन की आवश्यकता है।

उनके शैक्षिक आंदोलन ने भारत के विभिन्न हिस्सों में बाल-केंद्रित शिक्षा के लिए काम करने वाले कई शिक्षाविदों और समाज सुधारकों को प्रेरित किया। नूतन बाल शिक्षण संघ जैसी संस्थाओं ने इन विचारों को व्यापक रूप से फैलाने में मदद की।

इसलिए, माता-पिता और शिक्षकों के बीच सहयोग गिजूभाई बधेका के शैक्षिक दर्शन का एक अनिवार्य स्तंभ था।

6 गीजूभाई बधेका के पालन-पोषण और अधिगम संबंधी विचारों की समकालीन प्रासंगिकता

गीजूभाई बधेका के शैक्षिक विचार आधुनिक समय में भी अत्यंत प्रासंगिक बने हुए हैं। कई देशों की वर्तमान शिक्षा प्रणालियाँ शैक्षणिक तनाव, अत्यधिक प्रतिस्पर्धा, बच्चों में भावनात्मक चिंता और माता-पिता की भागीदारी की कमी जैसी समस्याओं का सामना कर रही हैं। गीजूभाई का दर्शन इन चुनौतियों के लिए मूल्यवान समाधान प्रस्तुत करता है।

आजकल कई माता-पिता परीक्षा प्रदर्शन और करियर की सफलता पर अत्यधिक ध्यान केंद्रित करते हैं। बच्चे अक्सर बहुत कम उम्र से ही दबाव का अनुभव करते हैं। गीजूभाई ने ऐसी यांत्रिक शिक्षा का पुरजोर विरोध किया और आनंदमय अधिगम, भावनात्मक कल्याण और रचनात्मकता पर जोर दिया।

आधुनिक मनोविज्ञान भी उनके कई विचारों का समर्थन करता है। समकालीन शैक्षिक अनुसंधान यह मानता है कि भावनात्मक सुरक्षा, माता-पिता का सहयोग और सकारात्मक घरेलू वातावरण संज्ञानात्मक विकास और शैक्षणिक उपलब्धि को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करते हैं। स्नेह, स्वतंत्रता और अनुभवात्मक अधिगम पर उनका जोर वर्तमान बाल मनोविज्ञान सिद्धांतों के साथ निकटता से मेल खाता है।

भारत की राष्ट्रीय शिक्षा नीति भी गीजूभाई के शैक्षिक दर्शन के समान कई सिद्धांतों को प्रतिबिंबित करती है, जिनमें अनुभवात्मक अधिगम, खेल आधारित शिक्षा, समग्र विकास और रटने की प्रवृत्ति को कम करना शामिल है।

© Copyright @ Authors

ISSN: 2348-473X
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 6.74)
Journal Website: www.nrjss.in

डिजिटल युग में, माता-पिता को अत्यधिक स्क्रीन उपयोग, पारिवारिक मेलजोल में कमी और बच्चों की बाहरी गतिविधियों में गिरावट जैसी नई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इस संदर्भ में, कहानी सुनाने, खेल, रचनात्मकता और पारिवारिक बंधन पर गिजूभाई का जोर विशेष रूप से महत्वपूर्ण हो जाता है।

उनका दर्शन शिक्षा में मानसिक स्वास्थ्य के महत्व को भी रेखांकित करता है। बच्चों में चिंता और अवसाद के बढ़ते मामले भावनात्मक रूप से सहायक पालन-पोषण की आवश्यकता को दर्शाते हैं। गिजूभाई का मानना था कि बच्चे भय और दबाव के बजाय विश्वास और समझ के वातावरण में पनपते हैं।

इसके अलावा, स्वतंत्र सोच और सामाजिक जिम्मेदारी को बढ़ावा देने में उनकी लोकतांत्रिक पालन-पोषण की अवधारणा आज भी प्रासंगिक है। आधुनिक समाजों को निष्क्रिय शिक्षार्थियों के बजाय रचनात्मक और भावनात्मक रूप से संतुलित व्यक्तियों की आवश्यकता है। गिजूभाई का बाल-केंद्रित दृष्टिकोण ऐसे गुणों को विकसित करने में सहायक है।

उनके शैक्षिक लेखन शिक्षकों, माता-पिता और बाल मनोवैज्ञानिकों को प्रेरित करते रहते हैं। दिवास्वप्न जैसी रचनाएँ आनंदमय अधिगम वातावरण बनाने के लिए व्यावहारिक अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं।

7 निष्कर्ष

अंततः, गिजूभाई बधेका माता-पिता को शिक्षा में आवश्यक भागीदार मानते थे। उनका मानना था कि सीखना परिवार के भीतर प्रेम, स्वतंत्रता, भावनात्मक सुरक्षा और सार्थक अनुभवों के माध्यम से शुरू होता है। उनके दर्शन में इस बात पर बल दिया गया है कि शिक्षा मात्र परीक्षाओं की तैयारी नहीं है, बल्कि बच्चे के संपूर्ण व्यक्तित्व के विकास की प्रक्रिया है। उनके विचारों की चिरस्थायी प्रासंगिकता एक मानवीय और प्रगतिशील समाज के निर्माण में करुणापूर्ण पालन-पोषण और बाल-केंद्रित शिक्षा के शाश्वत महत्व को दर्शाती है।

REFERENCES

1. Gijubhai Badheka (1931). *Divaswapna (Daydream)*. Ahmedabad: Navajivan Publishing House.
2. Inflibnet Educational Resource on Gijubhai Badheka
3. Teachers Institute Article on Gijubhai Badheka and Child Centered Education
4. Official Gijubhai Badheka Educational Writings Archive

© Copyright @ Authors